विदेश मन्त्रालय, भारत सरकार

एवं

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

संस्कृतगंगासंगमः

अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन

International Sanskrit Conference

भारतीय ज्ञान परंपरा : वैश्विक ज्ञान के विकास में संस्कृत का योगदान

(Indian Knowledge System : The Contribution of Sanskrit to the Development of Global Knowledge)

दिनांक 30 नवम्बर, 2025 से 01 दिसंबर, 2025 तक

सम्मलेन सन्दर्भ –

हमारा भारतवर्ष प्राचीन सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर से समृद्ध देश है। यहाँ की शास्त्र संरक्षण परंपरा ने प्राचीन भारतीय ज्ञान को पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित और संवर्धित किया है। इस परंपरा का निर्वहन करने में देवभाषा संस्कृत का अभूतपूर्व योगदान रहा है। संस्कृत न केवल धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों की भाषा रही है, बल्कि विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, योग, वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र और अन्य अनेक विषयों की मूल भाषा भी रही है। यह सर्वविदित है कि भारत में शास्त्र संरक्षण की परंपरा वैदिक काल से ही चली आ रही है। 'सर्वज्ञानमयो हि स:' के अनुसार वेद समस्त ज्ञान के आधार हैं। हमारे क्रांतदर्शी ऋषियों और मुनियों ने अपने प्रातिभ ज्ञान को श्रुति और स्मृति परंपरा के माध्यम से आगे बढ़ाकर सहस्रों वर्षों से इस परम्परा का संरक्षण किया। सर्वप्रथम यह परंपरा मौखिक रूप से शुरू हुई और बाद में लिपिबद्ध हुई। आज यह भारतीय ज्ञान परम्परा के रूप में अनेक माध्यमों से हमारे पास उपलब्ध है। यदि हम प्राचीन वांग्मय के संरक्षण की दृष्टि से संस्कृत भाषा के विपुल ग्रंथों के योगदान की बात करें तो ज्ञात होता है कि भारतीय शास्त्रों में वेद, उपनिषद, पुराण,महाभारत और रामायण जैसे ग्रंथ हैं, जो भारतीय संस्कृति, परम्परा, इतिहास और दर्शन को सुरक्षित रखते हैं। आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, गणित और गोल विज्ञान जैसे विषयों में संस्कृत के ग्रंथों ने अमूल्य योगदान दिया है। साहित्य, कला, संगीत और नाट्यशास्त्र जैसे क्षेत्रों में भी संस्कृत ग्रंथों का योगदान अविस्मरणीय है। भारत के प्राचीन ग्रंथ आधुनिक विज्ञान के विकास के लिए भी प्रेरणास्रोत बने हैं। यदि यह कहा जाय कि मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संस्कृत भाषा के ग्रंथों का अभूतपूर्व योगदान है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। 'सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा' के अनुसार भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत का योगदान केवल भारतीय ज्ञान परंपरा के विकास में ही नहीं वरन वैश्विक ज्ञान के विकास में भी है। इसीलिए भारत को विश्वगुरु भी कहा जाता है। महाभारत में सत्य ही कहा गया है कि–

धर्मे अर्थे कामे च मोक्षे च भरतर्षभ। यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।।

विश्वविद्यालय परिचय

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय सुरम्य उत्तराखंड के हरिद्वार में अवस्थित है जिसकी स्थापना वर्ष 2005 में उत्तराखंड सरकार द्वारा संस्कृत भाषा के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से की गयी। विश्वविद्यालय शास्त्रीय विषयों के अध्ययन-अध्यापन के साथ ही संस्कृत भाषा में अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

सम्मेलन का उद्देश्य

इस सम्मेलन का प्रमुख उद्देश्य विश्व को यह अवगत कराना है कि कैसे संस्कृत ने न केवल भारत बल्कि समस्त विश्व के ज्ञान-विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रमुख उप–विषय

- ★ संस्कृत साहित्य में वैश्विक ज्ञान / विश्व शान्ति / अर्न्तराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य
- ★ भारतीय ज्योर्तिविद्या / हस्तरेखा / मस्तिष्क रेखा / अंकशास्त्र / वास्तु / प्रश्नलग्न
- ★ वैदिक वाङ्मय शुक्लयजुर्वेद, कृष्णयजुर्वेद, अथर्ववेद / ब्राह्मण आरण्यक एवं उपनिषद्
- ★ विश्व भाषाओं के अध्ययन में संस्कृत की भूमिका / प्राचीन व्याकरण / नव्यव्याकरण
- ★ पुराण साहित्य एवं उपपुराण / सृष्टि प्रक्रिया एवं मानव इतिहास
- ★ प्रज्ञाचक्षु विद्या / मेधा जनन / स्मृति / शास्त्र संरक्षण एवं शास्त्र संवर्धन
- ★ भारतीय ज्ञान परम्परा में आधुनिक ज्ञान विज्ञान
- ★ दर्शनशास्त्र, न्याय एवं वैशेषिक, सांख्य, वेदान्त एवं मीमांसा में आध्यात्मिक चिन्तन / श्रीमद्भगवद्गीता
- ★ योग विज्ञान / अष्टांग योग / पातंजल योगशास्त्र / हठयोग
- ★ बौद्ध एवं जैन विद्या / पाली प्राकृत एवं संस्कृत का अर्न्तसम्बन्ध–भाषा विज्ञान
- ★ कृत्रिम बुद्धिमत्ता / संगणकीय संस्कृत / एन.एल.पी. / एस.ओ.आई.एल (Sanskrit Operating System for Indian Languages)
- ★ भारतीय ज्ञान परम्परा में कर्मकाण्ड / मन्त्र चिकित्सा पद्धति / शास्त्रीय विधि
- ★ भारतीय ज्ञान परम्परा में धातु विज्ञान / कृषि विज्ञान / रसायन विज्ञान
- ★ भारतीय ज्ञान परम्परा में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति / रोग निदान
- ★ भारतीय ज्ञान परम्परा में धर्मशास्त्र एवं स्मृतियां
- ★ भारतीय ज्ञान परम्परा में इतिहास / रामायण एवं महाभारत
- ★ भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षाशास्त्र / मानव मूल्य एवं नैतिक शिक्षा
- ★ राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 – गुरुकुल शिक्षा बनाम आधुनिक शिक्षा प्रणाली

आमंत्रित प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान

1. Mr. Jay Mickelson, Seattle (USA)
2. Mr. Marcis Gasuns, Moscow (Russia)
3. Dr. Aitzhanova Assel (Ananda Vrindavani D-D), Astana (Kazakhstan)
4. Swami Satprakashananda Saraswati, Kuala Lumpur (Malaysia)
5. Swami Sanyuktanand ji Suva (Fiji)
6. Mr. Daniel Hume, Addis Ababa (Ethiopia)
7. Emeritus Professor of Pali, Colombo (Sri Lanka)
8. Shri Pankaj Maurya, Manama (Bahrain)
9. Mr. Ilya Tarkan, Minsk (Belarus)

सम्मेलन की विशेषताएँ

- ★ विचार–गोष्ठी
- ★ सांस्कृतिक संध्या
- ★ संवाद सत्र
- ★ संस्कृत भाषा में शोध–पत्र प्रस्तुति
- ★ प्रदर्शनी एवं पुस्तक विमोचन
- ★ चयनित शोध–पत्रों का प्रकाशन
- ★ भारत एवं विदेश के प्रख्यात संस्कृत विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान

शोध आमंत्रण

इच्छुक विद्वान मुख्य एवं उप विषयों से सम्बंधित अपने शोध–पत्र (संस्कृत / हिंदी / अंग्रेजी में) दिनांक 25 नवम्बर, 2025 तक ई–मेल ischaridwar@usvv.ac.in पर प्रेषित कर सकते हैं। उक्त तिथि के पश्चात् प्राप्त होने वाले शोधपत्रों पर विचार नहीं किया जायेगा।

पंजीकरण शुल्क

संकाय सदस्य - 600/-

शोधच्छात्र- 400/-

छात्र - 200/-

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

डॉ. नीना मल्होत्रा

सचिव, विदेश (दक्षिण), भारत सरकार

श्री दीपक कुमार

सचिव, संस्कृत शिक्षा, उत्तराखंड शासन

संरक्षक

प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री

कुलपति, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

मार्ग दर्शक

श्री दिनेश कुमार

कुलसचिव, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

श्री लखेंद्र गौथियाल

वित्त नियंत्रक, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

समन्वयक

डॉ. प्रकाश चन्द्र पन्त

विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

संयोजक

डॉ. सुमन प्रसाद भट्ट

सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

संपर्क सूत्र -9917189039/9045378835

ई-मेल: ischaridwar@usvv.ac.in वेबसाइट: www.usvv.ac.in

सम्मेलन स्थल :- **संस्कृत भवन, उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी,** रानीपुर झाल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)